क. फारस में नहेमायाह:

- **समाचार**
  - अर्तक्षत्र ने यरूशलेम के पुनर्निर्माण को रोकने का आदेश दिया था (एज्रा 4)। फिर उसे उनके शत्रुओं द्वारा नष्ट कर दिया गया; उसकी दीवारें और द्वार जला दिये गए।
  - नहेमायाह ने तुरंत प्रार्थना की और लोगों और यरूशलेम शहर के लिए उपवास किया, परमेश्वर से हस्तक्षेप करने के लिए कहा।

- **प्रार्थना**
  - नहेमायाह की किताब उसे प्रार्थना का आदमी के रूप में दिखाती है (२:४; ४:४-५, ९; ५:३२; ६:१४; १३:१४; २९)।
  - इस प्रार्थना का मुख्य बिंदु परमेश्वर के वादों को याद रखना और उन का दावा करना है।.
  - परमेश्वर हमें उसके वादों का दावा करते हुए सुनना पसंद करता है। वह उन्हें हमारे जीवन में पूरा करने के लिए उत्सुक है (लूका ११:१३)।

- **अनुरोध**
  - नहेमायाह की प्रार्थना के चार महीने बाद, सही क्षण आया, और परमेश्वर ने उसे उसके अनुरोध (४४४ ई.पू.) के बारे में अर्तक्षत्र से बात करने दी।
  - राजा अपने पियाऊ की उदासी देख कर चिंतित था। नहेमायाह राजा की भावनाओं को भाया। उसने यरूशलेम की दीवारों के पुनर्निर्माण की अनुमति का अनुरोध किया।
  - अर्तक्षत्र को परमेश्वर ने प्रेरित किया। उसने नहेमायाह को यहूदा का गवर्नर नियुक्त किया और पुनर्निर्माण के लिए अधिकृत किया।

ख. यरूशलेम में नहेमायाह:

- **उसका अधिकार**
  - राजा ने नहेमायाह को एक निजी रक्षक दिया और उस क्षेत्र के राज्यपालों के लिए पत्र दिया। आसाप को आदेश दिया गया था कि वह नहेमायाह को वह सब सामान दे जिसकी उसे दीवारों के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यकता होगी।
  - सम्बल्लत (सामरिया का गवर्नर), तोबियाह (अम्मोन का गवर्नर) और गेशेम (एदोम और मोआब का गवर्नर) नाराज हो गए जब उन्होंने यह सुना कि नहेमायाह यहूदी लोगों की मदद करने के लिए आ रहा था। उन्होंने शुरुआत से ही नहेमायाह के काम को बिगाड़ने की कोशिश की।

- **उसकी योजना**
  - नहेमायाह ने अपनी छोटी सेना पर भरोसा नहीं किया, लेकिन कवच के एक विशेष सूट का इस्तेमाल किया: परमेश्वर के वादे, और आश्वासन कि वह परमेश्वर का काम कर रहा था। वह सावधानी से आगे बढ़ता रहा:
    (1) उसने स्वयं वास्तविक स्थिति की *समीक्षा की*
    (2) उसने किए जाने वाले काम की *योजना बनाई*
    (3) उसने नेताओं को *इकट्ठा किया* और अपनी योजना साझा की
    (4) उसने सभी को काम करने के लिए *प्रोत्साहित किया*
    (5) उसने प्रतिबद्धता का *अनुरोध किया*
  - जब हम परियोजनाओं का नेतृत्व करते हैं और जब हम लोगों के संपर्क में होते हैं, तो हमें अपनी योजनाओं और वार्तालापों में परमेश्वर को शामिल करना चाहिए। हमेशा उत्थान और उत्साहवर्धक शब्दों का प्रयोग करें।

यह नहेमायाह की प्रार्थना थी (नहेमायाह १:५-११):